UP Board Notes Class 7 Hindi Chapter 19 महात्मा ज्योतिबा फुले (महान व्यक्तित्व)

पाठ का सारांश

ज्योतिबा का जन्म 1827 ई० में हुआ। एक वर्ष की अवस्था में ही माँ के मरने पर दाई सगुणाबाई ने मातृवत् इनका पालन किया। सात वर्ष की अवस्था में इन्होंने घर में ही पढ़ना शुरू किया। इनकी प्रतिभा को पहचान कर विद्वान गफ्फार बेग और फादर लिजीट साहब ने इन्हें स्कूल भिजवाया। ये स्कूल में सदा प्रथम आते रहे। ये समाज, धर्म और देश के बारे में चिन्तन किया करते थे। गुलामी से इन्हें नफरत होती थी। समाज में -भेद था और दलितों व स्त्रियों की दशा अच्छी नहीं थी। दलितों और स्त्रियों की शिक्षा के रास्ते बन्द थे। इन्होंने दलितों और लड़कियों को अपने घर में पढ़ाना शुरू कर दिया। यह कार्य छिपाकर किया जाता। समर्थक बढ़ने पर इन्होंने खुले आम स्कूल चलाना शुरू कर दिया। एक कठिनाई यह थी कि पढ़ाई के लिए शिक्षक नहीं मिलते थे। इन्होंने अपनी पत्नी सावित्री को पढ़ाया। प्रशिक्षण के बाद वे भारत की प्रथम प्रक्षित शिक्षिकां बनीं।
समाज के लोग कुपित हो उठे। स्कूल जाती सावि का अपमान किया जाता। लोगों ने ज्योतिबा को समाज से बहिष्कृत करने की धमकी दी। पति-पत्नी को घर छोड़कर कठिनाइयाँ सहनी पड़ीं, परन्तु ये अपने लक्ष्य से डिगे नहीं।
महात्मा ज्योतिबा ने ‘सत्य शोधक समाज’ की स्थापना की। यह अन्य संगठनों से भिन्न था। यह सारे महाराष्ट्र में फैल गया। इस समाज ने जगह-जगह दलितों और लड़कियों के लिए स्कूल खोले। छुआछूत का विरोध किया गया। किसानों के हितों की रक्षा के लिए आन्दोलन चलाया गया। इनके संघर्ष के कारण सरकार ने एग्रीकल्चर एक्ट पास किया। धर्मों, समाजों और परम्पराओं के सत्य को उजागर करने के लिए इन्होंने तृतीय रत्न, छत्रपति शिवा जी, ब्राह्मणों का चातुर्य, किसान का कोड़ा, राजा भोसला का पखड़ा, अछूतों की कैफियत आदि पुस्तकें लिखीं। सन् 1890 ई० में उनको निधन हो गया।
जीवन भर गरीबों, दलितों और महिलाओं के लिए संघर्ष करनेवाले इसे सच्चे नेता को जनता ने ‘महात्मा’ की उपाधि से विभूषित किया।

https://www.evidyarthi.in/